



उत्तर प्रदेश कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा

सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, मेरठ
का भ्रमण करने और समीक्षा के उपरान्त की
कार्यवृत्त
अनुसंधान प्रगति रिपोर्ट



माननीय कुलपति, सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, मेरठ एवं उपकार सदस्य

सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, मेरठ के दौरे की कार्यवृत्त

4-5 अगस्त 2025 को, उत्तर प्रदेश कृषि अनुसंधान परिषद [उपकार], लखनऊ के निम्नलिखित सदस्यों ने सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, मेरठ का दौरा किया। इस दौरान उन्होंने परिसर और संबद्ध कृषि विज्ञान केंद्र [केवीके] में पिछले तीन वर्षों [2022-2025] के अनुसंधान, शिक्षा और विस्तार गतिविधियों की समीक्षा की।

1. डॉ. संजय सिंह, महानिदेशक

2. डॉ. राजर्षि कुमार गौड़, उप महानिदेशक [अनु. परि. प्र. और सम.]

3. डॉ. परमेश्वर सिंह, उप महानिदेशक [कृ. शि. और प्रौ. ह.]

1	वित्त पोषित परियोजनाओं की संख्या:		75																												
	ACRIP	ICAR	U.P.C.A.R.	Projects from other agencies (RKVY, SADP, UPCST, DBT, DST, Central & State Govt)	International Projects	Non-Plan Projects																									
	6	8	4	42	-	15																									
	परियोजना की कुल लागत (रुपये में): 8104.89 Lakhs																														
	ACRIP	ICAR	U.P.C.A.R.	Projects from other agencies	International Projects	Non-Plan Projects																									
	55.20	1220.73	127.18	6547.31	-	154.47																									
2	<p>प्रमुख शोध उपलब्धियाँ:</p> <ul style="list-style-type: none">भारत की पहली गैर-जीएम शाकनाशी-सहिष्णु [non GM Herbicide tolerant] बासमती चावल किस्मों, डीएसआर पूसा बासमती 1979 और पूसा बासमती 1985 का परीक्षण केंद्र पर किया गया है।सुमितोमो जैव-उर्वरक लट्टू [Sumitomo bio-fertilizer Lattu] (ह्यूमिक एसिड और समुद्री खरपतवार अर्क) की प्रभावकारिता और मात्रा का परीक्षण और मात्रा निर्धारित की गई है।चावल जर्मप्लाज्म का रखरखाव: केंद्र में 681 चावल जर्मप्लाज्म का रखरखाव किया गया है।रबी 2022-23 से 2024-25 के दौरान कुल 41 समन्वित परीक्षण (गेहूं-22 और जौ-19) सफलतापूर्वक किए गए और इन सभी परीक्षणों के आंकड़ों की रिपोर्ट की गई। <p>विभिन्न परीक्षणों में परीक्षण के लिए प्रस्तुत प्रविष्टियाँ नीचे दी गई तालिका में दिए गए विवरण के अनुसार हैं:</p> <table><tr><th>Year/Trial</th><th>IPPSN</th><th>IVTs</th><th>AVTs</th><th>SVTs</th></tr><tr><td>2022-23</td><td>10</td><td>03</td><td>-</td><td>-</td></tr><tr><td>2023-24</td><td>10</td><td>03</td><td>-</td><td>3</td></tr><tr><td>2024-25</td><td>10</td><td>04</td><td>01</td><td>3+1 (new)</td></tr><tr><td>Total</td><td>30</td><td>10</td><td>01</td><td>04</td></tr></table> <ul style="list-style-type: none">सभी केंद्रों पर जीवामृत, घनमृत और जैव कीटनाशक तैयार किए जा रहे हैं।मवेशियों में सुपर ओव्यूलेशन के लिए एफएसएच एल्यूटिंग चिटोसन गोल्ड नैनोसस्पेंशन विकसित किया						Year/Trial	IPPSN	IVTs	AVTs	SVTs	2022-23	10	03	-	-	2023-24	10	03	-	3	2024-25	10	04	01	3+1 (new)	Total	30	10	01	04
Year/Trial	IPPSN	IVTs	AVTs	SVTs																											
2022-23	10	03	-	-																											
2023-24	10	03	-	3																											
2024-25	10	04	01	3+1 (new)																											
Total	30	10	01	04																											

गया है।

- डेयरी प्रसंस्करण संयंत्र और गुणवत्ता नियंत्रण प्रयोगशाला का निर्माण पूरा हो चुका है और चार प्रयोगशाला उपकरण खरीदे जा चुके हैं।
- वित्तीय वर्ष 2024-25 में लक्षित महिला लाभार्थियों पर व्यापक सामाजिक-आर्थिक आधार रेखा सर्वेक्षण किया गया। आईएफपीआरआई द्वारा विकसित कृषि में महिला सशक्तिकरण सूचकांक WEAI उपकरण का उपयोग करके कृषि और संबद्ध क्षेत्र में महिला सशक्तिकरण की स्थिति, वर्तमान कौशल और प्रथाओं, आजीविका के स्रोत आदि का आकलन किया गया। चयनित गाँव बलीदपुर (दौराला ब्लॉक), लिसोरा (खतौली ब्लॉक) और भोपा (मुजफ्फरनगर ब्लॉक) हैं।
- उर्वरक प्रबंधन से गन्ना उत्पादकता पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा। पोटेशियम का प्रयोग बेहतर गुणवत्ता के साथ उच्च उत्पादकता के लिए प्रभावी पाया गया क्योंकि पोटेशियम की कमी से उपज में उल्लेखनीय कमी आती है।
- अंतिम उपयोगकर्ताओं तक पशु चिकित्सा टेलीमेडिसिन सेवाएँ पहुँचाने के उद्देश्य से सॉफ्टवेयर का विकास और परीक्षण वर्तमान में प्रगति पर है। इसके अतिरिक्त, पशु स्वास्थ्य पेशेवरों और किसानों की क्षमता निर्माण के लिए साहित्य और प्रशिक्षण सामग्री विकसित की जा रही है।
- पारंपरिक FSH आधारित भ्रूण पुनर्प्राप्ति की प्रभावशीलता प्रति पशु प्रति सत्र 6.5 कॉर्पस ल्यूटियम, 5.28 भ्रूण और 3.5 व्यवहार्य भ्रूण पाई गई।
- हार्मोन rhFSH (750 IU), FSH (250 माइक्रोग्राम) rhFSH (450IU) का चिटोसन गोल्ड नैनो सस्पेंशन, साहीवाल गायों में सुपरओव्यूलेशन प्रेरित करने में समान रूप से प्रभावी पाया गया, जिनकी औसत कॉर्पस ल्यूटियम संख्या क्रमशः 6.25 ± 0.39 , 6.66 ± 0.52 और 6.5 ± 0.43 थी।
- मोबाइल पशु चिकित्सा क्लिनिक (एम्बुलेंस) की सफलतापूर्वक स्थापना की गई। यह मोबाइल इकाई अल्ट्रासाउंड स्कैनिंग मशीन और रक्त एवं मल परीक्षण हेतु आवश्यक प्राथमिक नैदानिक सुविधाओं से सुसज्जित है, जिससे बांझपन का सटीक निदान और पशुओं के लिए अधिक प्रभावी उपचार प्रोटोकॉल संभव हो सके।
- किसानों के घर-घर पशु स्वास्थ्य शिविर नियमित रूप से आयोजित किए जाते थे, जिनमें पशु चिकित्सा विज्ञान के विभिन्न विषयों के विशेषज्ञ शामिल होते थे, जिनमें शामिल हैं: पशु चिकित्सा, पशु शल्य चिकित्सा और रेडियोलॉजी, पशु स्त्री रोग और प्रसूति, पशु रोग विज्ञान, पशु परजीवी विज्ञान। इन बहु-विषयक शिविरों ने पशुधन आबादी को व्यापक स्वास्थ्य सेवाएँ प्रदान कीं। परियोजना के दौरान, 2,797 किसानों के 10,939 पशुओं की जाँच की गई और उनका उपचार किया गया।
- इन क्षेत्रीय दौरों के दौरान एकत्र किए गए नमूनों और आँकड़ों को व्यवस्थित रूप से रिकॉर्ड और विश्लेषण किया गया। इस जानकारी को संबंधित विभागों की शोध परियोजनाओं में एकीकृत किया गया, जिससे शैक्षणिक परिणामों में महत्वपूर्ण योगदान मिला। इसके अलावा, निरंतर डेटा संग्रह ने एक महामारी विज्ञान डेटाबेस के विकास को सक्षम किया, जो भविष्य में पशुधन स्वास्थ्य नियोजन और प्रभावी रोग

	<p>नियंत्रण रणनीतियों के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।</p> <ul style="list-style-type: none"> रबी 2022-23 से 2024-25 के दौरान भारतीय सरसों पर कुल 06 समन्वित परीक्षण सफलतापूर्वक किए गए और इन सभी परीक्षणों के आंकड़ों की रिपोर्ट तैयार की गई। इन परीक्षणों के आंकड़ों को आईसीएआर-आईआईएमआर भरतपुर [ICAR-IIMR, Bharatpur] द्वारा प्रकाशित वर्ष 2022-23, 2023-24 और 2024-25 की वार्षिक रिपोर्ट (फसल सुधार) में शामिल किया गया। 	
4	<p>नया अवलोकन</p> <ul style="list-style-type: none"> <i>Lantana camara</i> से प्राप्त हरे ZnO-नैनोकण की गेहूँ पर परीक्षण की गई, जो कवक नियंत्रण और अंकुरण एवं वृद्धि में सहायक पाया गया। पश्चिमी उत्तर प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों में उगाई जाने वाली प्रमुख सब्जी फसलों (फूलगोभी (<i>Brassica oleracea</i> var. botrytis), भिंडी (<i>Abelmoschus esculentus</i>), टमाटर (<i>Solanum lycopersicum</i>), Brinjal (<i>Solanum melongena</i>), आलू (<i>Solanum tuberosum</i>), पालक (<i>Spinacia oleracea</i>) में कीटनाशक अवशेषों और उनकी उपस्थिति से जुड़े स्वास्थ्य जोखिमों का आकलन। मुजफ्फरनगर के विभिन्न क्षेत्रों से एकत्रित विभिन्न सब्जी फसलों में कार्बेन्डाजिम, एसीफेट, क्लोरपाइरीफॉस, साइपरमेथ्रिन, फिप्रोनिल, एंडोसल्फान, प्रोपिकोनाज़ोल और डाइक्लोरवॉस जैसे कीटनाशक अवशेषों के स्तर की GC/LC-MS का उपयोग करके जाँच। <i>Holotrichia serrata</i> (फैब्रिकियस) पर <i>Metarhizium anisopliae</i> का जैवपरीक्षण। <i>Holotrichia serrata</i> पर कवक का रोगजनन। (फैब्रिकियस)। AMR का पता लगाने के लिए FTIR आधारित मॉड्यूल FMD प्रकोप के लंबे अंतराल के बाद serotype A की रिपोर्ट 	
5	<p>नवीन नवाचार</p> <ul style="list-style-type: none"> विभिन्न औषधीय मशरूम की उत्पादन तकनीक मछली के चारे में कम लागत वाली, अपरंपरागत सामग्री (चने की भूसी और शहतूत के पत्ते) का उपयोग। मवेशियों में सुपरओव्यूलेशन के लिए FSH eluting chitosan gold nanosuspension विकसित किया गया। <i>Lantana camara</i> से प्राप्त हरे जिंक ऑक्साइड नैनोकण, जिंक ऑक्साइड-चिटोसैन और जिंक ऑक्साइड-चिटोसैन-मैन्कोजेब नैनो-संयुग्म को nano-fungicide के रूप में संश्लेषित और अभिलक्षित किया गया। चुकंदर और गेंदे से प्राकृतिक सुगंधित गुलाल पहली बार विकसित किया गया है। पारंपरिक कीटनाशकों पर अपनी निर्भरता कम करने के इच्छुक किसानों के लिए वैकल्पिक तरीकों और टिकाऊ कृषि पद्धतियों की खोज करना जो व्यवहार्य विकल्प के रूप में काम कर सकें। 	
6	Application Potential:	उल्लिखित परियोजना की अनुप्रयोग क्षमता के बारे में कोई स्पष्टीकरण

	आवेदन क्षमता:	नहीं दिया गया	
	Long Term दीर्घकालिक	14 - Projects	
	Mid-term मध्यावधि	46 - Projects	
	short term अल्पकालिक	15 - Projects	
7	PhDs Produced no: 25	Technical Personnel trained:246	Other personnel trained: 527
10	<p>पेटेंट और उसके व्यावसायीकरण की स्थिति:</p> <ol style="list-style-type: none">1. पशु Anaplasmosis की रोकथाम और उपचार के लिए उपयोगी एक पॉलीहर्बल तैयारी आवेदन संख्या 202211024162 दिनांक 25/04/20222. Bovine Brucellosis की रोकथाम और उपचार के लिए उपयोगी एक पॉलीहर्बल तैयारी संख्या 20221 1024163 दिनांक 25/04/20223. फसलों में Helicoverpa Armigera संक्रमण के जैविक नियंत्रण के लिए नवीन मेटारिज़ियम एनीस्प्लिया स्ट्रेन (एसवीपीयूएटी)। आवेदन संख्या 202311052033 दिनांक 02/08/20234. पत्तागोभी के कीड़े, Hellula Undalis के आनुवंशिक रहस्यों को उजागर करना: Transcriptome sequencing, कार्यात्मक विश्लेषण और कीट प्रबंधन अनुप्रयोग आवेदन संख्या 202311071155 दिनांक 18/10/235. हेलिकोवर्पा आर्मिजेरा के लिए व्यापक ट्रांसक्रिप्टोमिक-संचालित स्थायी कीट प्रबंधन आवेदन संख्या 202311071154 दिनांक 18/10/236. स्थायी कीट प्रबंधन के लिए आणविक गतिशीलता। आवेदन संख्या 202411000806 दिनांक 04/01/20247. पत्तागोभी में Hellula undalis के लक्षित नियंत्रण हेतु मेटाराइज़ियम एनिसोप्लाई-आधारित जैव-कीटनाशक संरचना। आवेदन संख्या 202411003667 दिनांक 18/01/20248. "पारंपरिक एलोपैथिक जीवाणुरोधी एजेंटों की रोगाणुरोधी प्रभावकारिता बढ़ाने हेतु सहक्रियात्मक हर्बल सहायक" के लिए अनुमोदन प्रक्रिया में।		
11	<p>उत्पाद/प्रक्रिया विकास एवं व्यावसायीकरण की स्थिति:</p> <ul style="list-style-type: none">• Lantana camera, Azadirecta indica, Parthenium और Sonchusasper से संश्लेषित हरा ज़िंक ऑक्साइड नैनोकण।• Zinc oxide-Chitosan-Mancozeb Nanoconjugate संश्लेषण• पारंपरिक एलोपैथिक जीवाणुरोधी एजेंटों की रोगाणुरोधी प्रभावकारिता बढ़ाने के लिए सहक्रियात्मक हर्बल सहायक। पेटेंट आवेदन प्रक्रियाधीन है।		
12	<p>नवप्रवर्तन केंद्र/इन्क्यूबेशन केंद्र/स्टार्ट-अप/उद्यमिता</p> <ul style="list-style-type: none">• गौशाला का विकास और गाय आधारित प्राकृतिक खेती के लिए जीवामृत, घनमृत और जैविक कीटनाशक तैयार करना• महिला प्रौद्योगिकी पार्क (WTP) का विकास		

उपकार टीम अवलोकन:

1. अधिकांश शोध कार्यों की प्रगति बहुत धीमी है। प्रधान अन्वेषकों को वित्त पोषण एजेंसियों को उपयोगिता प्रमाणपत्र प्रस्तुत करने में समस्या आ रही है, जिससे वित्त पोषण एजेंसियों से धनराशि अवमुक्त होने में विलम्ब हो रहा है।
2. समिति द्वारा वित्त कार्यालय से संपर्क करने का प्रयास किया गया, लेकिन विभाग से कोई उत्तर प्राप्त नहीं हुआ।
3. यद्यपि शोध वैज्ञानिक अपने उत्पादों/टेक्नोलॉजी के लिए पेटेंट दाखिल कर रहे हैं, लेकिन वे उन उत्पादों/टेक्नोलॉजी के लाइसेंस और व्यावसायीकरण से अनभिज्ञ हैं। यह विश्वविद्यालय के लिए एक बड़ा वित्तीय हानि है। निजी कंपनियाँ इन किस्मों/टेक्नोलॉजी को अपनाकर योजनाओं से धन कमा रही हैं।
4. विश्वविद्यालय के पास दीर्घकालिक, मध्यम अवधि और अल्पकालिक के बारे में कोई स्पष्ट दृष्टिकोण नहीं है; उन्हें इस पहलू पर कार्य करने की आवश्यकता है।
5. शोध की प्रकाशन की गुणवत्ता बहुत निम्न स्तर की है। अधिकांश प्रकाशन निम्न गुणवत्ता वाली पत्रिकाएँ हैं।
6. पिछले पाँच वर्षों में अनाज/दलहन/तिलहन में कुछ ही किस्में जारी या अधिसूचित की गई हैं, लेकिन बागवानी और सब्जियों की एक भी किस्म जारी या अधिसूचित नहीं की गई।
7. पुरानी और महत्वपूर्ण किस्मों के संरक्षण में कोई संतोषजनक कार्य नहीं किया गया।

उपकार टीम के सुझाव/अनुशंसाएँ:

1. विश्वविद्यालय में अंतःविषय सहयोग को बढ़ावा देने से समग्र शोध परिणामों में उल्लेखनीय वृद्धि होती है।
2. नए और युवा प्राध्यापकों को अच्छे प्रस्ताव लिखने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। उन्हें वैज्ञानिक लेखन या प्रस्ताव लेखन पर कुछ प्रशिक्षण की आवश्यकता है।
3. पेटेंट दाखिल और उसके लाइसेंसिंग/व्यावसायीकरण के लिए उचित प्रशिक्षण होना चाहिए; इससे उन्हें उत्पाद/टेक्नोलॉजी को किसानों तक पहुंचाने में मदद मिलेगी। प्रौद्योगिकी हस्तांतरण के लिए एक सुव्यवस्थित प्रणाली स्थापित करना अत्यंत आवश्यक है।
4. छात्रों और प्राध्यापकों में उद्यमशीलता की मानसिकता विकसित करने के लिए पहल की जानी चाहिए।
5. विश्वविद्यालय को एक व्यापक मूल्यांकन ढाँचे को अपनाने पर विचार करना चाहिए जो शोध योगदान की गुणवत्ता, गहराई और सामाजिक प्रभाव को पहचानते हों, और एक ऐसी शोध संस्कृति को बढ़ावा दें जो केवल प्रकाशन संख्या तक ही सीमित न हो।
6. शोध पारिस्थितिकी तंत्र में सतत योगदान को मान्यता देने और प्रोत्साहित करने के लिए शोध-उन्मुख भत्ते शुरू किए गए हैं। ये प्रोत्साहन सामूहिक रूप से एक सहायक वातावरण का निर्माण करते हैं, जो शिक्षकों को अपने शोध प्रयासों को प्राथमिकता देने और उनमें उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए प्रेरित करते हैं।
7. शैक्षणिक उत्कृष्टता, अंतर-सांस्कृतिक दृष्टिकोणों को बढ़ावा देने और वैश्विक शोध परिदृश्य को समृद्ध बनाने के लिए शोध में अंतर्राष्ट्रीय सहयोग को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

8. शिक्षकों और छात्रों के लिए संरचनात्मक प्रतिपुष्टि तंत्र और अनुसंधान केंद्रों और विभागों की समय-समय पर समीक्षा करना।
9. शोध परिदृश्य को सुदृढ़ करने के लिए, एक व्यापक दीर्घकालिक दृष्टिकोण प्रस्तुत करना आवश्यक है जो तात्कालिक चुनौतियों से परे हो, जिसमें रणनीतिक योजना और विकास शामिल हो।
10. प्रत्येक विश्वविद्यालय को आवश्यकता-आधारित शोध के लिए विशिष्ट प्रमुख क्षेत्रों की पहचान करने के लिए प्रोत्साहित करना, विशिष्ट विशेषज्ञता को बढ़ावा देने और सामाजिक चुनौतियों का समाधान करने के लिए एक रणनीतिक अनिवार्यता है।
11. शोध के लक्ष्यों को प्रभावी ढंग से संप्रेषित करने के लिए प्रेस विज्ञप्ति, सोशल मीडिया अभियान और इंटरैक्टिव प्लेटफॉर्म जैसे विविध माध्यमों का उपयोग करना।
12. उत्तर प्रदेश के कृषि उत्पादन आयुक्त के अनुसार, उपकार को निर्देश दिया गया कि उपकार प्रत्येक छह महीने में राज्य कृषि विश्वविद्यालयों में अनुसंधान, शिक्षा और विस्तार की समीक्षा और निगरानी करेगा।

अनुसंधान निदेशालय में परियोजना समीक्षा बैठक



कृषि महाविद्यालय का दौरा



बासमती गुणवत्ता प्रयोगशाला



नेमाटोलॉजी [Nematology] लैब, पादप रोग विज्ञान विभाग



आनुवंशिकी एवं पादप प्रजनन विभाग की आणविक प्रयोगशाला



बागवानी महाविद्यालय में ऊतक संवर्धन प्रयोगशाला



जैव प्रौद्योगिकी महाविद्यालय में हाइड्रोपोनिक इकाई

पोस्ट हार्वेस्ट एवं टेक्नोलॉजी कॉलेज में बाजरा प्रसंस्करण इकाई



प्रौद्योगिकी महाविद्यालय



मोबाइल पशु चिकित्सा एम्बुलेंस सुविधाओं की प्रगति की समीक्षा

विश्वविद्यालय बिक्री काउंटर



कैलिफ़ोर्निया केज यूनिट का दौरा

पोल्ट्री रिसर्च एंड ट्रेनिंग सेंटर (PRTC) में कैलिफ़ोर्निया केज यूनिट





पोल्ट्री फीड यूनिट का दौरा



आईएलएफसी-II इकाई में भेड़ और बकरी इकाई



पादप सूत्रकृमि [Nematode] अनुसंधान खंड



कृषि की नई तकनीक को किसानों तक पहुंचाएं : संजय सिंह

मेरठ, 4 अगस्त (देशवर्ष)। सरदार चल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय में उत्तर प्रदेश एग्रीकल्चर रिसर्च कॉन्सिल के डायरेक्टर जनरल डॉक्टर संजय सिंह ने विश्वविद्यालय में चल रही 59 परियोजनाओं की समीक्षा की इस दौरान उनके साथ डी डी जी उपकार राज ऋषि गौर एवं डॉक्टर परमिंदर सिंह भी उपस्थित रहे। कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति डॉक्टर के.के. सिंह के कुशल निदेशन में विगत 3 वर्षों में विश्वविद्यालय का कृषि शिक्षा एवं शोध एवं प्रसार के क्षेत्र में चौमुखी विकास हुआ है।

■ किसानों की समस्याओं को छल्लान में रखते हुए परियोजनाएँ की जानी चाहिए तैयार

इसका नतीजा है की कृषि विश्वविद्यालय अपनी तकनीकी ज्ञान को किसानों के खेत खलियान तक पहुंचाने में सफल हो सका है। उत्तर प्रदेश कृषि अनुसंधान परिषद के डायरेक्टर जनरल डॉक्टर संजय सिंह ने कहा कि आज इस बात की आवश्यकता है कि हम नई एजुकेशन पॉलिसी का एडिक्शन करें और कृषि की नई तकनीक को किसानों तक पहुंचाएं जिससे इन तकनीकों के माध्यम से किसानों की खेतों में नई फसल पैदा हो सके और उनकी आय में बढ़ोतरी हो इस



तक का प्रयास हर वैज्ञानिक को करना होगा उन्होंने कहा की अच्छी और गुणवत्ता युक्त परियोजनाएं बनाकर विश्वविद्यालय द्वारा भेजी जाएगी तो उत्तर प्रदेश सरकार उन परियोजनाओं को वित्तीय सहायता देने के लिए तैयार है उन्होंने कहा कि उत्तर प्रदेश के किसानों की समस्याओं को ध्यान में रखते हुए परियोजनाएं तैयार की जानी चाहिए और परियोजनाओं को तैयार करते समय इस बात का भी ध्यान रखा जाए कि उनके परिणाम

संश्लेषजनक हो और किसानों के लिए उपयोगी हो उन्होंने वैज्ञानिकों से आग्रह किया कि वह उभरती हुई प्रकृतियों को विकसित करने पर ध्यान दें डॉ. संजय सिंह ने अधिक से अधिक शोध पर प्रकाशित करने और पेटेंट करने के लिए विज्ञानियों को आगे आने की बात कही कृषि विश्वविद्यालय में छात्रों के फ्लैगशेड के बढ़ने पर उन्होंने खुशी व्यक्त करते हुए कहा इससे छात्रों को तो लाभ मिल ही रहा है साथ ही

विश्वविद्यालय का भी प्रदेश में अग्रेसर नाम हो रहा है क्योंकि जब छात्रों का फ्लैगशेड बढ़ेगा उससे विश्वविद्यालय की रेटिंग में भी इजाफा होगा। उप महानिदेशक डॉक्टर राज ऋषि गौर ने कहा कि विज्ञान की बायोटेक्नोलॉजी की नई तकनीक को ध्यान में रखते हुए परियोजनाएं बनानी चाहिए जिससे उनका सीधा लाभ जल्द से जल्द किसानों तक पहुंचा जा सके उन महानिदेशक डॉक्टर परमिंदर सिंह ने विज्ञानियों से सलाह होते हुए कहा शोध कार्यों को प्राथमिकता के आधार पर किया जाना चाहिए और अच्छे शोध जनरल में शोध पत्रों का प्रकाशन एवं पेटेंट का प्रत्येक वैज्ञानिक को प्रयास करना होगा तभी गुणवत्ता युक्त शोध किया जा सकेगा।

उन्नतशील प्रजातियां के विकास पर ध्यान दें

कृषि विश्वविद्यालय में डायरेक्टर जनरल उपकार परियोजनाओं की समीक्षा

ग्रीन इंडिया

मेरठ। सरदार चल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय में उत्तर प्रदेश एग्रीकल्चर रिसर्च कॉन्सिल के डायरेक्टर जनरल डॉक्टर संजय सिंह ने विश्व में चल रही 59 परियोजनाओं की समीक्षा की इस दौरान उनके साथ डी डी जी उपकार राज ऋषि गौर एवं डॉक्टर परमिंदर सिंह भी उपस्थित रहे।

कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति डा. के.के. सिंह के कुशल निदेशन में विगत 3 वर्षों में विश्वविद्यालय का कृषि शिक्षा एवं शोध एवं प्रसार के क्षेत्र में चौमुखी विकास हुआ है। इसी का नतीजा है की कृषि विश्वविद्यालय अपनी तकनीकी ज्ञान को किसानों के



खेत खलियान तक पहुंचाने में सफल हो सका है।

उत्तर प्रदेश कृषि अनुसंधान परिषद के डायरेक्टर जनरल डा. संजय सिंह ने कहा कि आज इस बात की आवश्यकता है कि हम नई एजुकेशन पॉलिसी का एडिक्शन करें और कृषि की नई तकनीक को किसानों तक पहुंचाएं जिससे इन तकनीकों के माध्यम से किसानों की

खेतों में नई फसल पैदा हो सके और उनकी आय में बढ़ोतरी हो। इस तरह का प्रयास हर वैज्ञानिक को करना होगा। अच्छी और गुणवत्ता युक्त परियोजनाएं बनाकर विश्व द्वारा भेजी जाएगी तो उत्तर प्रदेश सरकार उन परियोजनाओं को वित्तीय सहायता देने के लिए तैयार है। उत्तर प्रदेश के किसानों की समस्याओं को ध्यान में रखते हुए परियोजनाएं तैयार

की जानी चाहिए और परियोजनाओं को तैयार करते समय इस बात का भी ध्यान रखा जाए कि उनके परिणाम संतोषजनक हो और किसानों के लिए उपयोगी हो। उन्होंने वैज्ञानिकों से आग्रह किया कि वह उन्नतशील नई प्रजातियों को विकसित करने पर ध्यान दें। उप महानिदेशक डा. राज ऋषि गौर ने कहा कि विज्ञान की बायोटेक्नोलॉजी की नई तकनीक को ध्यान में रखते हुए परियोजनाएं बनानी चाहिए जिससे उनका सीधा लाभ किसानों तक पहुंचा जा सके उप महानिदेशक डॉक्टर परमिंदर सिंह ने विज्ञानियों से सलाह होते हुए कहा शोध कार्यों को प्राथमिकता के आधार पर किया जाना चाहिए और अच्छे शोध जनरल में शोध पत्रों का प्रकाशन एवं पेटेंट का प्रत्येक वैज्ञानिक को प्रयास करना होगा तभी गुणवत्ता युक्त शोध किया जा सकेगा।